समकालीन महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित जीवन संघर्ष

*जल सिंह गुर्जर

शोध सारांश

साहित्य में उपन्यास विधा एक ऐसी विधा है जो मानव जीवन की जटिलताओं, विद्रूपताओं और उसके अन्तर्विरोधों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। वर्तमान समय में महिला लेखिकाएं भी इस विधा लेखन में अग्रणी हैं। इन लेखिकाओं ने पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देते हुए पीढ़िगत मोहभंग, ग्रामीण परिवेश, महानगरीय जीवन, साम्प्रदायिकता, आदिवासी जनजातियों, श्रमिक वर्ग के शोषण का यथार्थ चित्रांकन किया है। आज स्त्री संघर्ष के द्वारा समाज में प्रचलित परम्परागत जड़ मूल्यों को चुनौती देकर अपनी अलग पहचान स्थापित कर रही है। प्रस्तुत शोध आलेख में इन्हीं पहलुओं पर विचार किया गया है।

शोध–पत्र

आधुनिक औद्योगिक पूंजीवादी समाज व्यवस्था में स्त्री की दशा और दिशा, भावना और संवेदना, संघर्ष और सामर्थ्य को चित्रित करने में हिन्दी महिला लेखिकाओं के लेखन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महिला लेखिकाओं ने समाज की परिस्थितियों के विस्तृत विवेचन को अपने उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी है। इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं को अपने लेखन में समाहित करते हुए यथार्थ दृष्टिकोण को उपन्यासों में स्थान दिया है। इस काल की प्रमुख लेखिका प्रभा खेतान ने नारी जीवन की अनुभूतियों को केन्द्र में रखते हुए उपन्यासों की रचना की है। 'छिन्नमस्ता' प्रभा खेतान का स्त्री केन्द्रित उपन्यास है। जिसमें स्त्री की मार्मिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने में किसी भी प्रकार का परहेज नहीं किया है। यह उपन्यास कलकत्ता में रहने वाली उच्चवर्गीय मारवाड़ी परिवार से संबंधित है। इस उपन्यास में प्रिया एक ऐसी लड़की है जो जन्म से ही समाज की जर्जर मान्यताओं और पुरुष की आदिम भूख से उपेक्षित, निरन्तर शोषित और उत्पीड़ित है। 'छिन्नमस्त' की प्रिया कहती है कि "औरत कहां नहीं रोती? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे भोग ऐश्वर्य के बावजूद ..... पलंग पर रात–रात भर अकेले करवटे बदलते हुए। ..... हजारों सालों से इनके ये आंसू बहते आ रहे हैं।[1]

पुरुष द्वारा स्त्री शोषण और दमन में सम्पूर्ण समाज की हिस्सेदारी तथा सभ्य समाज की पहचान बनी हुई है। गोपाल राय ने 'छिन्नमस्ता' उपन्यास के बारे में कहा है कि "आधुनिक युग में नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोण में बदलाव तो जरूर आया है और स्त्री खुद भी अपनी लड़ाई लड़ने की संकल्प शक्ति से युक्त हो रही है, पर अभी यह जागरूकता और संघर्ष शुरूआती दौर में ही है और कुल मिलाकर आज भी भारत में नारी भोगने वाले छोर पर ही है। अपने अधिकार भी अभी उसे पुरुष से ही प्राप्त होते हैं। पर आज की स्त्री अपना अधिकार हासिल करने के लिए अपना भाग्य स्वयं निर्मित करने के लिए संघर्ष की राह पर है यही 'छिन्नमस्ता का विषय है।[2]

अतः प्रिया स्त्री संघर्ष के द्वारा समाज और परम्परा से आरूढ़ जड़ मूल्यों को चुनौती देती हुई अपनी अलग पहचान बनाती है। 'छिन्नमस्ता' का मिथक प्रिया जैसी संवेदनशील आधुनिक स्त्री के लिए बहुत ही सार्थक है जो इस मनःस्थिति में ही अपनी लहुलुहान जिन्दगी को दोबारा जीती है, वह अपना कटा सिर अपने हाथ में लेकर पुरुष समाज से संघर्ष करती है। अतः यह उपन्यास नारी यातना तथा विद्रोह एवं मुक्ति को प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है।

'अपने–अपने चेहरे' उपन्यास में प्रभा खेतान ने स्त्री नियति के एक दूसरे पहलू को परिभाषित करने की कोशिश की है। स्त्री को लेकर प्रभा खेतान के पास अपना अनुभव बोध है जो इस उपन्यास में गहरी संवेदनशीलता के साथ व्यक्त हुआ है। प्रभा जी का मानना है कि विवाह, पति और बच्चों से परे स्त्री का अस्तित्व है। स्त्री की जिन्दगी सिर्फ पुरुष की तलाश नहीं है उसकी अपनी सार्थकता है। उपन्यास की रमा सोचती है "वह प्यार तो एक बार करती है बस एक बार। एक ही पुरुष से। कभी शादी से पहले कभी शादी के बाद। इसके बाद तो वह अपने आपको झेलना सीखती है।"रमा एक विवाहित और बाल बच्चों वाले पुरुष से प्रेम करती है, परन्तु स्त्री के लिए पुरुष का दोस्त होना परम्परागत भारतीय समाज को स्वीकार्य नहीं है। यदि उसे समाज में स्वीकृति पानी है तो उसका पत्नी होना अनिवार्य है। दोस्त के रूप में वह दूसरी औरत है। पहली औरत वह है जिसकी मांग में सिंदूर होता है, उसे पत्नी होने का बल प्राप्त होता है। दूसरी औरत इससे वंचित होती है। रमा के रूप में दूसरी औरत की पीड़ा, अर्न्तद्वन्द्व और आत्ममन्थन ही इस उपन्यास का केन्द्रीय विषय है जिसमें वह हारती, टूटती और तार–तार होती है।

प्रभा खेतान द्वारा विरचित 'पीली आंधी' उपन्यास में समस्त मारवाड़ी कबीले की कथा कही है। सम्पूर्ण उपन्यास में विभिन्न चरित्रों के माध्यम से मारवाड़ी वणिक समाज की तीन पीढ़ियों का चित्रण किया गया है। यह उपन्यास प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् के वातावरण में इस मारवाड़ी वणिक समाज का चित्रण है जो बिना पूंजी अपने घर से सैकड़ों मील दूर व्यापार की तलाश में 'देसावर' जाते हैं। ये वणिक दर–दर की ठोकरे खाते हुए दूर–दराज शहरों में पनाह लेकर अपनी आंखों के सपनों को पूर्ण करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं। सुजानगढ़ के श्री हरमुख रामजी तथा उनके बेटे रामेश्वर, किशन और पौत्र माधो के माध्यम से समस्त वणिक समाज की वेदना और परिश्रम को अंकित किया गया है। चाची, बड़ी मां और सोमा के द्वारा हर युग की स्त्री पीड़ा को चित्रित किया है। इसमें समाज की अन्ध परम्पराओं, रूढ़ संस्कारों में जकड़ी, धुंआती और टूटती जिंदगी का अद्भुत चित्रण किया गया है।

इस उपन्यास में प्रभा खेतान ने पद्मावती के माध्यम से परम्पराओं में जकड़कर जीवन व्यतीत करने वाली स्त्री किस प्रकार अपनी इच्छाओं को मारकर परिवार के लिए जीवन यापन करती है वहीं सोमा के द्वारा आज अपने अधिकारों के प्रति सचेत नारी परिस्थितियों के सामने झुकने की अपेक्षा सब बन्धनों को तोड़कर अपने जीने का मार्ग चुनती है को अभिव्यक्ति दी है।

'पीली आंधी' उपन्यास में संयुक्त परिवार की तमाम खूबियों और कमियों को प्रस्तुत किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर समाज में जो संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है, उसका सफलतापूर्वक चित्रांकन किया गया है।

इस प्रकार 'पीली आंधी' प्रतीक है सब कुछ उजड़ जाने का, सब कुछ तहस–नहस होने का। इस पीली आंधी के बाद कैसे एक छोटा सा अंकुर फूटता है और वह फलने–फूलने लगता है यही इस उपन्यास की कथा वस्तु है।

मृदुला गर्ग द्वारा रचित उपन्यासों में 'कठगुलाब' उनका महत्वपूर्ण उपन्यास है। 'कठगुलाब' बांझपन का प्रतीक है जिसे लेखिका ने प्रतीकात्मक रचना के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। यह 'कठगुलाब स्वभाव का प्रतीक बनकर सामने आया है। जो कि बाहर से सख्त लेकिन अन्दर से नरम है। स्त्री स्वभाव 'कठगुलाब' के समान है। 'कठगुलाब' की स्त्री (स्मिता, मारियान, नर्मदा, असीमा) पुरुष सत्ता (जिम जारविन, विपिन, इर्विन) के विरोध में संघर्ष

करते हुए कभी सफल हुई है तो कभी विफल। इस उपन्यास में मारियन सोचती है– "नहीं, औरत होना एक विडम्बना है। नहीं, औरत खुद एक विडम्बना है। जहाँ औरत होगी, विडम्बना जन्म लेगी। औरत, तेरा नाम विडम्बना है।"[3]

लेकिन सच तो यह है कि अन्त तक संघर्ष करने का प्रण इन्होंने ले लिया है। अतः यह उपन्यास पुरुष द्वारा प्रताड़ित, शोषित नारी की संघर्ष कथा है।

स्त्री संघर्ष के साथ ही इसमें देश की वर्तमान सामाजिक स्थिति व ग्रामीण जनता के जीवन में सुधार लाने के लिए किए जा रहे समाज सुधारकों के हित कार्यों को प्रस्तुत किया है जो निजी एवं व्यक्तिगत स्वार्थों की ओर इंगित करता है।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' उपन्यास में विंध्याचंल के जीवन के प्रमाणिक और अंतरंग अनुभव, पहाड़ी अंचल की धरती और बीहड़ पहाड़ों के जीवन के सामाजिक यथार्थ तथा गहरी मानवीय संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है। मैत्रेयी ने बऊ (दादी), प्रेम (मां) और मंदा के माध्यम से... तीनों पीढ़ीयों की कथा व उनके जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया है। गोपाल राय के अनुसार "इदन्नमम' की मन्दाकिनी वास्तविक अर्थों में एक जूझारू युवती है जो केवल परिवार और समाज द्वारा स्त्री के निर्मित बन्धनों को ही नहीं तोड़ती वरन् उस शोषण के विरूद्ध भी तनकर खड़ी होती है जो आज के नेताओं और माफिया ठेकेदारों द्वारा आदिवासियों और अन्य ग्रामीणों पर कहर बरपा रहे हैं।"[4]

इसमें मैत्रेयी पुष्पा ने बुन्देलखण्ड के परिवेश और ग्रामीण समाज के यथार्थ को अपनी आंचलिक भाषा के माध्यम से जीवन्त रूप प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की मन्दा अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर उभरती है। राजेन्द्र यादव के अनुसार "महानगरीय मध्यम वर्ग की संघर्ष करती और पांवों के नीचे जमीन की तलाश करती कथा नारियों के बीच गांव की मन्दा एक अजीब निरीह, निष्कवच, निश्च्छल, दृढ़ संकल्प नारी का व्यक्तित्व लेकर उभरती है।"[5]

मैत्रेयी ने उपन्यास के अन्त तक मन्दाकिनी को संघर्षरत दिखाकर कथा को यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया है। आज के मनुष्य के जीवन की समस्याओं को इस उपन्यास के पात्रों के माध्यम से जीवन्त रूप दिया गया है।

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में अतरपुर गांव की कहानी है। जिसमें खेती किसानी से जुड़े जाटों का चित्रण किया गया है। जो आज की बदलती हुई परिस्थितियों में यह चित्रण विश्वसनीय भी है साथ ही इसमें नारी चेतना भी परिलक्षित होती है। इसमें एक–दूसरे से दुश्मनी निभाने वाले गांव के प्रमुख सदस्य तथा एक–दूसरे से लड़ती–झगड़ती, एक–दूसरे के भेद सबके सामने खोलने वाली स्त्री यहां पुरुषसत्तात्मक समाज का शिकार होती दिखाई देती है। इस उपन्यास के प्रारम्भ में ही स्त्री की हत्या कर दिए जाने पर भी एक हल्की सी सुगबुगाहट के अतिरिक्त कोई हलचल नहीं होती, जिसका किसी के द्वारा भी कोई प्रतिरोध नहीं होता है। इस दयनीय नियती का बहुत ही मार्मिक चित्रण मैत्रेयी ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है। न केवल पिछड़ी जाति की स्त्री, अपितु दलित समाज की स्त्री भी प्रेम करने के अधिकार से वंचित है। इस अपराध के लिए जहां रेशम की हत्या कर दी जाती है वहीं बिसुनदेवा और गुलकन्दी के विजातीय विवाह करने के कारण सुनियोजित ढंग से जिंदा जला दिया जाता है। इस अमानवीय कृत्य के विरूद्ध कोई भी खड़ा नहीं होता, खड़ी होती है तो सिर्फ सारंग। जो पढ़ी लिखी न होकर भी इनके खिलाफ आवाज उठाती है। इस उपन्यास की सारंग अन्याय से लड़ने, आतताइयों से लड़ने, नारी अधिकारों के लिए संघर्षरत होने के साथ–साथ नारी संहिता की समस्त मान्यताओं को चुनौती देती हुई न केवल श्रीधर से देह संबंध स्थापित करती है, अपितु पुरुष सत्ता को चुनौती देती हुई प्रधान के चुनावों के लिए भी खड़ी होती है।

मैत्रेयी ने नारी विद्रोह के साथ–साथ गांव की राजनीति, सरकारी कामकाज, जांतिपांति की व्यवस्था, उत्सव और

त्योहार तथा थानसिंह मास्टर के रूप में व्यक्तिगत स्वार्थपरता का यथार्थ चित्रांकन किया है।

मैत्रेयी द्वारा लिखित 'झूला नट' उपन्यास में एक पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया गया है, जिसमें सास–बहू, मां–बेटे, पति–पत्नी और देवर–भाभी के संबंधों की दास्तान प्रस्तुत की है। मां और पत्नीवृत भौजाई के संबंधों के पाट में पिसते युवक बालकिशन का मानसिक उद्वेग ही उपन्यास का प्रमुख कथ्य है। इस उपन्यास में शीलो के रूप में परम्परागत मूल्यों को चुनौती देने, स्त्री संहिता को नकारने और विद्रोह के रूप में चित्रण किया गया है। उसमें अपना भविष्य स्वयं लिखने की क्षमता है। "वशीकरण के सारे तीर–तरकश टूट जाने के बाद उसके पास रह जाता है जीने का निःशब्द संकल्प और श्रम की ताकत... एक अडिग धैर्य और स्त्री होने की जिजीविषा उसे लगता है कि उसके हाथ ही छठी अंगुली ही उसका भाग्य लिख रही है। .... और उसे ही बदलना होगा।"[6]

इस तरह से मैत्रेयी पुष्पा ने बेहद आत्मीयता और सहजता के साथ उपन्यास की नायिका शीलो के माध्यम से स्त्री शक्ति और बालकिशन के द्वारा पुरुष मानसिकता को अभिव्यक्ति दी है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा की एक बहुत ही सशक्त रचना है। यह उपन्यास कबूतरा जनजाति से संबंधित है। आज हमारे देश में ऐसी अनेक जनजातियां है जो देश को आजाद होने के बाद भी स्वतंत्र जीवन व्यतीत नहीं कर पाती है। इसमें कबूतरा जाति के लोग एक सभ्य समाज का हिस्सा बनना चाहते हैं परन्तु सभ्य समाज इन्हें जंगलों में रहने के लिए मजबूर करता है। इन जातियों को समान नागरिकता का अधिकार मिलने के उपरान्त भी इनका सम्मानजनक स्थान नहीं है। जिसके कारण पुरुष अपराध करने और स्त्री देह–व्यापार करने के लिए मजबूर होती है। सभ्य समाज की नजर में दलित कबूतरा जाति का संबंध जौहर के लिए लोककथा बनी रानी पद्मिनी तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की अंग रक्षिका झलकारी बाई से जोड़ते हैं जिनके द्वारा उनकी विवशता और अपनी पीड़ा भरी जिन्दगी का जीवन्त पात्रों के माध्यम से कथा संसार में प्रस्तुत हुआ है। उपन्यास के पात्र मंसाराम, कदमबाई, राणा और अल्मा के माध्यम से लेखिका ने हमारे आस–पास घटित यथार्थ को अंकित किया है।

गीतांजलि श्री द्वारा लिखित उपन्यास 'माई' में नयी पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी से मोह भंग की अभिव्यक्ति हुई है। इस उपन्यास की माई में भावप्रवणता और मनुष्य मन की पीड़ा की छवि देखने को मिलती है जो कि अपने परिवार की सुख सुविधाओं के संचालन में पिसती चली जाती है। जहां परिवार की सीमाओं से एक स्त्री को निकलना मुनासिब तक नहीं होता, उसमें सुनैना के द्वारा नकार होती है। इस उपन्यास में औपनिवैशिक मूल्यों के तहत पनपते मध्यमवर्गीय जीवन के सुख–दुःख तथा स्त्री की दयनीय नियति को सशक्त अभिव्यक्ति दी है।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' में साम्प्रदायिकता की समस्या को प्रमुखता से उभारा गया है। इसमें एक शहर है जहां एक 'मठ' है और एक विश्वविद्यालय है। ये दोनों ही साम्प्रदायिकता को हवा देते हैं। उपन्यास का 'मठ' हिन्दु साम्प्रदायिकता का प्रतीक है। यह साम्प्रदायिकता फासीवादी, रहस्यपूर्ण और आतंक से भरी दुनिया का सृजन करती है। साथ ही यह उपन्यास कठिन समय की बहुआयामी और उलझाव पैदा करने वाली सच्चाइयों से साक्षात्कार कराता है। जिसमें आगजनी, मारकाट, तद्जनित दहशत रोजमर्रा का जीवन बनकर एक भयावह सहजता पाते हैं। इसमें साम्प्रदायिक तनाव की असामान्य स्थिति में एक मुस्लिम पात्र के अकेला होने और अलग–थलग पडते जाने की मानसिकता निहित है। इस तनाव की आड़ में विश्वविद्यालय की राजनीति भी सक्रिय होती है तथा साम्प्रदायिकता के शिकार एक बुद्धिजीवी वर्ग का भी बहुत ही प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है। इस तरह यह उपन्यास वर्तमान शहरों में साम्प्रदायिकता के भयावह रूप को स्पष्ट करता नजर आता है।

राजी सेठ के द्वारा लिखा गया उपन्यास 'निष्कवच' में दो अलग–अलग वृत्तान्त प्राप्त होते हैं। इसमें दो अलग संस्कृतियों के परिवेश में अकेलेपन की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी गई है। हिन्दुस्तानी और विदेशी परिवेश को केन्द्र में

रखकर राजी सेठ ने प्रथम वृत्तान्त में नीरा, विशाल और बासू के माध्यम से बदलती धारणाओं, मान्यताओं, ऊब तथा अकेलेपन की पीड़ा, वहीं दूसरे वृत्तान्त में कथानायक और मार्था के द्वारा मूल्यों की डगमगाहट और अकेलेपन की छटपटाहट तथा बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्पष्ट किया गया है। "'निष्कवच' के दोनों वृत्तान्तों के पात्रों का ऐसा जूझना कहीं–न–कहीं मूल्यों के संक्रमण की गवाही भी देता है। जिन मान्यताओं से अब तक काम चलता रहा है, अब नहीं चल रहा है। एक स्निग्ध सुरक्षित संसार की तलाश पिछले मूल्यों को ध्वस्त जरूर करती है पर एक नया जुझारू साहस जुटाने के लिए सम्बद्ध भी होती है। जाहिर है, परिवेश में पनप रहे इन संघर्षों का समाज को तो अभ्यस्त होना ही होता है।"[7] राजी सेठ ने इसमें अपने सम्पूर्ण वैचारिक आधार के साथ जीवन यथार्थ तथा परिवेश का एक सशक्त और सार्थक चित्रांकन किया है।

अलका सरावगी द्वारा रचित 'कलि–कथारू वाया बाइपास' महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें मारवाड़ी समाज की कथा है जिसमें मारवाड़ी परिवेश तथा कलकत्ता के परिवेश का चित्रण है। उपन्यास का केन्द्रीय पात्र रामकिशोर अपने दिल के बाइपास ऑपरेशन के बाद वे अपने कैशोर्य की दुनिया में चले जाते हैं। उनके द्वारा उन्हीं दिनों की उलझनों से झूझते कलकत्ता शहर के परिवेश, व्यक्ति की मानसिकता और जीवन यथार्थ के साथ–साथ वर्तमान और भविष्य का यथार्थ रूप दृष्टिगोचर होता है। यह उपन्यास इंगित करता है – "आज के युग धर्म की ओर – जो मूल समस्याओं से बचकर बगल से सुविधाजनक रास्ते निकालने का है। उपन्यास इस युग धर्म की विडम्बना को किशोर बाबू के बाइपास ऑपरेशन के माध्यम से उजागर करता है, जो अन्ततः उन्हें उन्हीं चीजों की ओर ले जाता है, जिन्हें उन्होंने अब तक बाइपास कर रखा था।"[8]

यह उपन्यास युगीन परिवेश, स्त्री की पीड़ा, भोगवादी मानसिकता से पीड़ित समाज व्यवस्था की नयी पीढ़ी की असंवेदनशीलता को प्रकट करता है।

अलका सरावगी द्वारा रचित 'शेष कादम्बरी' उनका दूसरा उपन्यास है। इसमें रूबी दी और नातिन कादम्बरी के माध्यम से स्त्री जीवन दृष्टिगत होता है। "शेष कादम्बरी' मुख्य रूप से उन उत्पीड़ित स्त्रियों की ही दुखगाथा है जो जीवन के अर्थ को खोज करती सत्तर साल की रूबी गुप्ता या रूबी दी की संस्था परामर्श से जुड़ी है। सविता, सायरा, माया बोस, फरहा ऐसी ही स्त्रियां है जो तरह–तरह की मानसिक यंत्रणाओं का शिकार रही है जिनके लिए होने की भी कोई बड़ी सार्थकता नहीं है।"[9]

स्त्री पीड़ा के साथ ही पुरुष पात्र देवीलाल मामा, मिस्टर विपन और सुधीर के माध्यम से पुरुष मानसिकता तथा समाज व्यवस्था के यथार्थवादी जीवन मूल्यों का चित्रांकन है।

चर्चित महिला लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल का महत्वपूर्ण स्थान है। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में लेखिका ने विज्ञापन जगत की चकाचौंध भरी दुनिया को अंकिता के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अंकिता इस नई संघर्ष भूमि में अपनी सत्ता प्रतिष्ठा के लिए नारी मुक्ति और स्त्री स्वातंत्र्य की गुहार करती है। गोपाल राय के अनुसार "'एक जमीन अपनी' उपन्यास जिसका केन्द्रीय कथ्य बम्बई के महानगरीय परिवेश में विज्ञापन जगत के ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, तिकड़म, देह–व्यापार आदि के बीच प्रस्तुत 'नारी–विमर्श' है।"[10]

यह उपन्यास महानगरीय जीवन के बहुमुखी तथा बहुरंगी रूप का इजहार है, जिसमें अंकिता अपनी ठोस जमीन की तलाश में कई जगह देह शोषण तथा कई वारदातों का शिकार बनती है। इसमें पत्नी और प्रेमिका के रूप में आधुनिक स्त्री की स्थिति कितनी त्रासद है, इसका अंकन चित्रा मुद्गल ने गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की केन्द्रीय पात्र अंकिता के अलावा नीता, सुधांशु, मि. सक्सेना, हरीन्द्र, सविता, मेहता, शैलेन्द्र, मि. भोजराज आदि पात्रों के माध्यम से स्त्री–संघर्ष, अपसांस्कृतिक मूल्यों, बदलते जीवन मूल्यों तथा

सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों के साथ–साथ व्यक्ति की मनःस्थितियों और जीवन पद्धतियों को वर्तमान जीवन मूल्यों के सदंर्भ में स्पष्ट किया गया है।

'आवां' चित्रा मुद्गल का सर्वाधिक चर्चित एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है। चित्रा मुद्गल का यह वृहद् उपन्यास व्यवस्थाओं के खोखलेपन पर करारा प्रहार करने वाला उपन्यास है। इस वृहद् उपन्यास में कई कथाएं, उपकथाएं है, जिसके जरिए वर्तमान समय में व्याप्त सारी असंगतियों का खुलकर पर्दाफाश किया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के जाल में फंसी स्त्री की समस्याएं, स्त्री के बहुविध उत्पीड़न, श्रमिक संघर्ष, श्रमिक राजनीति के अन्तर्विरोध, पूंजीपति वर्ग के शोषण, राजनीतिज्ञों के छल छद्म, जातिवाद, दलित जीवन की त्रासदी आदि 'आवां में चित्रित विषय है।

प्रो. कल्याणमल लोढ़ा ने 'आवां' की समीक्षा में लिखा है "आवां एक जलती हुई भट्टी है, समाज में व्याप्त विसंगतियों की, जिन्हें आज हम प्रत्येक व्यक्ति के मुखौटे के अन्दर देख सकते हैं ..... 'आवां' की सुलगती आग को शांत करना नमिता के चरित्र का अनोखापन नहीं, यथार्थ में समझौता से अधिक जीवन का प्रकृत समाधान है। 'आवां' की तह में निहित मानवीय संवेदना केवल यत्र–तत्र बिखरते स्फुलिंग नहीं है। आज की अपसंस्कृति, औद्योगिक अभिशाप के प्रभावी चित्रण के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान विकृत और भ्रष्ट स्वरूप धारण करने वाली व्यवस्था है।"[11]

इस तरह देखे तो 'आवां' में शोषण के तमाम माध्यमों, तरीकों और मूल्यों का पर्दाफाश किया गया है। आम आदमी को सक्रिय, समझदार और जुझारू बनाने के लिए 'आवां' को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया है। इसमें यौन शोषण, बलात्कार, भोगवादी मूल्यों, ट्रेड यूनियनों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, मजदूर संगठनों तथा स्त्री और दलित उत्पीड़न का चित्रा मुद्गल ने वैचारिक बौद्धिकता के द्वारा वर्तमान जीवन के खोखलेपन का बेबाकी से चित्रण प्रस्तुत किया है।

महिला लेखिकाओं में कृष्णा सोबती का अपना विशिष्ट स्थान है। कृष्णा सोबती का उपन्यास 'दिलो–दानिश उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के दरम्यान दिल्ली में बसे एक खानदानी रईस वकील कृपानारायण की हवेली में उसके परिवार (मां, बहन, पत्नी और बेटे) के अन्तसंबंधों, आपसी लड़ाई–झगड़ों, मन–मुटावों, सुख–दुःख और स्थिति संतुलनों की कथा के बहाने उस समय के सामन्ती समाज में स्त्री–पुरुषों की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक चेतना की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

"हालांकि इस उपन्यास का कथानक एक सामन्ती हवेली और रईस समाज व्यवस्था से बावस्ता है, लेकिन कृष्णाजी के रचनात्मक कौशल का ही कमाल है कि उन्होंने उसकी अच्छाइयों और बुराइयों का तटस्थ आत्मीयता के साथ चित्रण किया है।"[12]

कृष्णा सोबती ने इस परिवेश से जुड़ी संवेदनाओं, तकलीफों, उलझनभरी मनःस्थितियों, मनोभावों का बहुत ही मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया है। कृष्णा सोबती ने उपन्यास की पात्र कुटुम्बप्यारी और विशेष रूप से महक बानो के परिस्थितिवश मानसिक द्वन्द्व को अभिव्यक्ति देने की रही है। उसके चरित्र की परिणति जिस तेजस्विता में होती है, उसके सामने परम्परागत पत्नी का कद छोटा होता जाता है। पारिवारिक संहिता, पत्नी और प्रेमिका के बीच झूलते कृपानारायण का चित्रण भी अत्यन्त करूणा के साथ अभिव्यक्त होता है।

इस उपन्यास के द्वारा कृष्णा सोबती ने दिल्ली के मूल सांस्कृतिक मूल्यों को प्रस्तुत किया है। यह सांस्कृतिक मूल्य लगभग हजार वर्षों के हिन्दू–मुस्लिम सम्पर्क का परिणाम थे जो आज लगभग नष्ट होने के कगार पर हैं। इस संस्कृति की विश्वसनीय प्रस्तुति कृष्णा सोबती ने दिलो–दानिश के माध्यम से दी है।

कृष्णा सोबती का 'समय सरगम' उपन्यास महानगरीय परिवेश के उच्च मध्यमवर्गीय वृद्ध जिन्दगियों पर केन्द्रीत है।

गोपाल राय के अनुसार "आज संयुक्त परिवार के भीतर और उसके बाहर जी रहे वृद्ध व्यक्तियों की समस्याएं बहुत ही जटिल हो गयी है। जीवन की सांझ में पहुंचकर अपने होने से जुड़ी संवेदनाओं और बूढ़ी आकांक्षाओं को झेलते, मृत्यु के आंतक की छाया में सांस लेते, तन–मन की ऊहापोह में झुंझलाते, रोग–बीमारी और चिन्ताओं से परेशान, रक्तचाप के ऊँचा–नीचा और नब्ज के तेज–धीमा होने को लेकर चिन्तित, डॉक्टरी नुस्खों और परहेज की बंदिशों में जीते वरिष्ठ नागरिकों की यह कहानी जितनी प्रमाणिक है उतनी ही संवेदना सिंचित भी।"[13]

कृष्णा सोबती ने इन समस्याओं का मार्मिक प्रसंगों और अंतरंग संवादों के साथ अभिव्यक्ति दी है। कृष्णा जी ने ईशान और अरण्या वृद्ध पात्रों के माध्यम से वृद्धजनों की त्रासद स्थिति, विवशता, अस्थिर मानसिकता, उनके प्रति बेटे बहुओं की उदासीनता, अकेलेपन आदि का चित्रांकन बहुत ही गहरी अनुभूति के साथ इस सच्चाई को प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिला लेखिकाओं ने उपन्यासों के माध्यम से मनुष्य के सुख–दुःख, राग–द्वेष, प्रेम, दया, करूणा, ममता, मानवीयता, पर दुःख कातरता, अहिंसा, उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति जैसे मानव के श्रेष्ठ मूल्यों को यथार्थ रूप से अभिव्यक्त किया है। यही नहीं इन विवेचित उपन्यासों में परम्परागत पितृसत्तात्मक व्यवस्था में जो बदलाव आया है और नारी की जो अग्रणी भूमिका उभरकर आयी है, यह इनके लेखन के सार्थक प्रयास का ही परिणाम है।

***व्याख्याता**
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कॉलेज, खेड़ली,
अलवर, (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. छिन्नमस्ता – प्रभा खेतान, पृष्ठ 220
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय – पृ. 384
3. कठगुलाब – मृदुला गर्ग – पृष्ठ 105
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय, पृ. 387
5. इदन्नमम – भूमिका से, राजेन्द्र यादव, पृ. 9
6. झूला नट – मैत्रेयी पुष्पा, फ्लैप पर
7. निष्कवच – राजी सेठ – फ्लैप पर
8. कलि–कथारू वाया बाइपास – अलका सरावगी – फ्लैप पर
9. कथादेश – परमानन्द श्रीवास्तव, पृ. 67
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास – गोपाल राय, पृ. 390
11. वागर्थ – नवम्बर, 2000
12. दिलो–दानिश – कृष्णा सोबती, फ्लैप पर
13. हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय – पृ. 323